International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आम आदमी की दुर्दशा का चित्रण और मटियानी का साहित्य

Dr. Subiya Faisal

PGT Hindi, K.V. 2 Raipur

प्रस्तावनाः

साहित्यकारों ने अपने साहित्य में आम आदमी का अंकन कर आम आदमी के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी पहलुओं को प्रस्तुत किया है। मटियानी जी के साहित्य में तो आम आदमी के जीवन से जुड़ी एक–एक बात को जैसे उन्होंने महसूस करके साहित्य में पिरोया सा लगता है। मटियानी जी के साहित्य में आम आदमी सर्वोपरि है, उन्होंने अपने साहित्य में जाति–धर्म, से उपर उठकर इंसाानियत को स्थान दिया है और यही बात उनके साहित्य को सबसे अलग स्थान दिलाती है उन्होंने अपने उपन्यासों में आम आदमी की मानवीय संवेदना और करूणा के भाव को प्रभावशाली ढंग से प्रकट किया है। मटियानी जी ने आम आदमी के रूप में जो स्वयं भोगा है वही अपने साहित्य में लिखा है उनका बचपन कुमायूँ अंचल में पहाड़ों में कष्टों से जूझते गुजरा यही जीवन उनके उपन्यासों में कथ्य बना तथा गांव के पीड़ित शोषित, दलितों के जीवन को भी उन्होंने प्रस्तुत किया जब मटियानी जी ने महानगरी मुंबई में फुटपाथ पर जीवन गुजारा और चाय की दुकान में काम करके जीवन गुजारा उसको भी मटियानी जी अपने साहित्य में बिना लाग लपेट के साथ चित्रित किया। सच तो यह है कि मामूली आदमी की जितनी दस्तकें मटियानी के उपन्यासों में है वैसी शायद कहीं और मिले।"[1]

मटियानी जी के उपन्यास 'मुठभेड़' में आम आदमी की दुदर्शा का चित्रण है। यह उपन्यास आज के समय में आम आदमी की स्थिति को साफ–साफ बयां करता है। एक ईमानदार पत्रकार जो कि ईमानदारी और लगन के साथ अपना कार्य पूर्ण करता है वह एस. पी. सहाय का भी मित्र है परन्तु उसने एक गलती करी कि अपने अखबार में 'राजनीति के मस्तक पर पाखण्डी के चरण' शीर्षक से नये गृहमंत्री पर उंगली उठाई थी। इस लेख को पढ़कर मंत्री जी ने उस पत्रकार की दुनिया हिलाने की ठान ली और उसे इसलिये अधमरा होने तक पीटा जाता है। उसके घर वालों को गालियां दी जाती है आखिर सब से तंग आकर पत्रकार के रूप में एक आम आदमी को अपना शहर छोड़कर जाना पड़ता है। इसमें यह बताया गया है कि जिसके पास पैसा और राजनीतिक प्रोटेक्शन नहीं है उसके साथ कभी भी कहीं भी कुछ भी हो सकता है। समाज में पूरी तरह से पैर पसार चुकी गुण्डागर्दी, भ्रष्टाचार ने आम आदमी का जीवन जीना दुष्वार कर दिया है। मटियानी जी के उपन्यासों में मुख्यतः आम आदमी का जीवन केन्द्र है।"[2]

मटियानी जी ने 'आकाश कितना अनंत है', 'बावन नदियों का संगम' उपन्यासों में भी आम आदमी के जीवन को प्रभावित करने वाले उच्च वर्ग, जैसे पूँजीपति, मालिक सेठ लोग, राजनीतिक नेता, वकील व समाजसेवी लोगों का पर्दाफाश किया है कैसे ये लोग आम आदमी के जीवन को अपने लालच के लिए नरक बना देते हैं। 'सवित्तरी' और 'डेरे वाले' उपन्यासों में भी मटियानी जी ने आम आदमी पर किसी न किसी तरह हो रहे शोषण को दिखाया है। सवित्तरी एक सुन्दर सुशील लड़की है । उसके पिता एक रिक्शा चालक है। सवित्तरी का एक भाई और बहन भी है, गरीबी के कारण सवित्तरी आसपास के घरों में महरी का काम करने जाती है परन्तु सुन्दर होने के कारण गन्दी सोच रखने वाले व्यक्ति उसके आसपास मंडराते रहते हैं और अर्थ के बल पर गरीबों का शोषण करने वाले लालची लोग एक दिन सवित्तरी को अपना शिकार बना लेते हैं। सवित्तरी के रूप में आम जनता की स्त्रियों के शोषण की कहानी को मटियानी जी ने बयां किया है आम आदमी का जीवन आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते हुए कैसे उतार चढ़ाव देखता है इसको मटियानी जी बड़ी सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :–

'गोपुली गफूरन', 'रामकली' उपन्यासों में मटियानी जी ने आम आदमी के जीवन जीने में आने वाली सामाजिक, आर्थिक कठिनाईयों को प्रस्तुत किया है। साथ ही समाज में नारी के शोषण की व्यथा की कथा को हम तक बड़ी गंभीरता के साथ पहुंचाया है 'चन्द औरतों का शहर' में तथा 'भागे हुए लोग' उपन्यास में धार्मिक समस्या से जुझते आम आदमी का अंकन है 'भागे हुए लोग' में कर्म से भागकर धर्म की शरण में जाने वाले आम आदमी को तथा अंधविश्वासों में बुरी तरह फंसे हुये समाज का अंकन किया गया है। आम आदमी को सारी परेशानियों से संघर्ष करते हुए जीवन जीने के ऊपर किसी शायर ने सही कहा है कि –

"जिन्दगी से बड़ी सजा ही नहीं
और क्या जुर्म हे पता ही नहीं .....
इतने हिस्से में बंट गया हूं मैं
के मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं।"[3]

अतः अपने साहित्य में मटियानी जी ने आम आदमी के जीवन को खोज कर रख दिया।
"शैलेश जी के समूचे लेखन में उनके अंदर जीवित एक आम आदमी के स्पंदन को स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है।"[4]

संदर्भ ग्रंथ–

1. मनु प्रकाश, 'कथा पुरूष शैलेश मटियानी' अग्रगामी प्रकाशन शादरा दिल्ली, 2015 पृष्ठ संख्या–137.
2. जोशी कला, जोशी प्रतिभा, शैलेश मटियानी की कहानियों का अनुशीलन नमन प्रकाशन नई दिल्ली, 2012 पृष्ठ संख्या–78.
3. https:/www.amarutala.com
4. जोशी कला, जोशी प्रतिभा, शैलेश मटियानी की कहानियों का अनुशीलन नमन प्रकाशन नई दिल्ली, 2012 पृष्ठ संख्या–79